Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी (प्रयागराज के संदर्भ में)

Dr. Anju Srivastava*

Associate Professor, Department of Sociology, Arya Kanya Degree College, Prayagraj (UP)

सार – *अनेक अंग्रेज विद्वानों का मानना है कि भारत में राष्ट्रीयता की भावना का उदय पूर्णता अंग्रेजी शासन की देन है। भारत तो सर्वदा से विभिन्न भाषाओं जातियों रीति-रिवाजों धर्मों विचारधाराओं और राजनीतिक विभक्ति वाला देश रहा है। जिसकी तुलना सहज ही एक अजायब घर से की जा सकती है। ऐसे देश में राष्ट्रीय भावना के होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। इस कारण राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति का श्रेय अंग्रेजी शासन को ही जाता है।*

परंतु अंग्रेज विद्वानों का उपरोक्त विचार तर्कसंगत और मान्य नहीं है। निसंदेह भारत विविधताओं का देश रहा है। उसके विस्तृत आभार और विचारधारा के अंतर्गत विभिन्न धर्म भाषाएं रीति रिवाज इत्यादि पनपते रहे हैं परंतु फिर भी इन विभिन्नताओं के पीछे मूल आधार पर हम भारत में एकता पाते हैं। राजनीतिक दृष्टि से विभक्त होते हुए भी सांस्कृतिक आधार पर भारत में मूलतः सर्वदा एकता विद्यमान रही है। वैदिक धर्म हिंदू रीति-रिवाज समान तीर्थ स्थान वेशभूषा और आचार विचारों की समानता ने भारत को सर्वदा एकता प्रदान की है। डॉक्टर अस्मित जैसे पश्चात विचारक में भी भारत की मौलिक एकता के संदर्भ में लिखा है कि भारत में विभिन्न नेताओं के मध्य इसके निवासियों में एक विशेष प्रकार की समानता और संस्कृति का विकास किया है। जो अन्य संस्कृतियों से। इससे हिंदुत्व कहा जा सकता है समय-समय पर बड़े-बड़े सास को जैसे अशोक महान और मुगल सम्राट अकबर ने भारत को राजनीतिक एकता प्रदान की है इस कारण भारतीयों में सर्वदा यह भावना रही है कि वह एक देश के नागरिक हैं। मध्यकालीन मुस्लिम संप्रदाय भी भारत में इतना घुल मिल गया था कि जब तक अंग्रेजों ने हिंदू और मुसलमानों के अंतर पर बल दिया भारतीय मुसलमान किसी पृथक राज्य का विचार तक नहीं कर सके और ना भारत में बाहर किसी अन्य देश को अपना देश मानते थे।

इस प्रकार राष्ट्रीय भावना के निर्माण के सहायक तत्व भारत में पहले से ही विद्यमान थे यद्यपि संदेह नहीं कि राष्ट्रीय भावना का विकास अंग्रेजी शासनकाल से पहले संभव नहीं हुआ। परंतु यह स्थिति भारत में ही नहीं थी सॉन्ग यूरोप में भी राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति हमें 19 वीं शताब्दी मैं प्राप्त होती है इस कारण यदि भारत में इसका आरंभ 19 वीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ तो कोई विशेष बात नहीं है अतः यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि राष्ट्रीय भावना के निर्माण तारीख तक तो भारत में अंग्रेजी शासन काल से पहले ही विद्यमान थे परंतु अंग्रेजी शासनकाल में अनेक कारणों से इस भावना को संगठित होने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके कारण भारत में राजनीतिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ तथा उनके कारणों में से कुछ महत्वपूर्ण कारणों को खोजा जाए तो यह कहना पूर्णता उपयुक्त होगा कि संपूर्ण विश्व में उभरती हुई राष्ट्रवाद की भावना जिसका विकास 1789 में हुई फ्रांस की राज्यक्रांति से हुआ। भारत में राष्ट्रीय भावना की उत्पत्ति में 19 वीं शताब्दी के सामाजिक और धार्मिक आंदोलनों का विशेष महत्वपूर्ण योगदान रहा है और इसमें खास करके महिलाओं की भागीदारी मुख्य है।

----------X----------

भारतीय नारी सहधर्मिणी तथा सहकर्मिणी, पुरुष की अपूर्णता को पूर्णता देने वाली, धार्मिक अनुष्ठानों की सिद्धि का आधार, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अहंभूमिका का निर्वाह करने वाले भले ही क्षेत्र घर का हो, शिक्षा या राजीनति का हो, आर्थिक पक्ष को सुदृढ़ करने का हो, शिशु के चरित्र निर्माण की बात हो, या पुरुष को असद्मार्ग से सद्मार्ग पर लोन की, साधना, त्याग तथा सहनशीलता का पक्ष हो या व्रत अनुष्ठान का; ममता या लालन का पक्ष हो या राष्ट्र निर्माण का विशेष दायित्व-सभी सामाजिक सम्बन्धों का निर्वा करते हुए, कत्तव्य की वेदी पर उसने अपने समस्त सुखों का परित्याग किया है। कहीं

www.ignited.in

राजमर्यादा का अनुपालन करने वाले पति का, जीवन की विषम स्थितियों में भी, छाया की तरह साथ निभाया, तो कहीं सेवा धर्म का पालन करते हुए, विश्वास की रक्षा के लिए ममता की बलि भी चढ़ाई। देश की रक्षा के लिए, शत्रु के प्रति भी भ्रातृभाव रखते हुए, भ्रातृ धर्म के निर्वाह की याचना की तो हँसते-हँसते विजय तिलक से अभिशिंचित कर पति को युद्ध भूमि के लिए प्रेरित भी किया। कहीं मनसा-वाचा-कर्मणा एकनिष्ठ भाव द्वारा प्रतिव्रता शिरोमति बन गयी तो कहीं शत्रु द्वारा अपमानित जीवन न जीना पड़े तथा कहीं युद्ध भूमि में अपने प्रति उत्पन्न प्रेमभाव पति को कत्र्तव्यविमुख न कर दे इसलिए देश के लिए जौहरव्रत भी अङ्गीकार किया।

शताब्दियों से चली आ रही परतंत्रता, मुस्लिम शासन, व्यापार के छद्म से सम्पूर्ण देश में अन्याय तथा अत्याचार से मुक्त 'बाँटों और राज्य करो की नीति पर आश्रित अंग्रेत शासन और उसमें छटपटाती भारतीय अस्मिता ने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के द्वारा अपने राज्य की प्राप्ति के लिए किये गये युद्ध घोष के द्वारा आन्दोलन का रूप धारण किया। झाँसी क्षेत्र में सुलगी हुई यह आन्दोलन की आग धीरे-धीरे सम्पूर्ण भारत में पै लने लगी। देश के प्रत्येक क्षेत्र एवं प्रत्येक जनमानस भय, आतंक एवं गुलामी से छटपटाता इस आन्दोलन से सम्बद्ध हुआ। सभी के भावनात्मक (मानसिक) बौद्धिक, शारीरिक, आर्थिक सहयोग प्रदान किया। समाज का अद्र्धांग तथा आधा भाग स्वरूप स्त्रियाँ भी पीछे न रहीं।

मुस्लिमों के अंग्रेजों के प्रति खिलाफत आन्दोलन तथा गान्धी जी के असहयोग आन्दोलन के बाद ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन ने गति पकड़ी। उस समय बहुसंख्यक भारतीय समुदाय ने सरकार प्रशासनिक सेवाओं (नौकरियों) को छोड़कर राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्ब होकर सक्रियता प्रदान की। महिलाएँ जो समाज में दूसरे दर्जे की नागरिक के रूप में शताब्दियों से मानी जाती रहीं, अशिक्षा पर्दा प्रथा, पारिवारिक तथा सामाजिक अत्याचारों के कारण घर की चहारदीवारी तक की निका कार्य क्षेत्र सिमटा रहा, बहुत अधिक संख्या में राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रारम्भ से सक्रिय सहयोग न दे सकीं किन्तु सामाजिकोत्थान धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक कार्यों तथा लक्ष्यों की अग्रभूमि प्रयाग में इस क्षेत्र में महिलाओं की भी सक्रिय भूमिका रही। राजनीति से सम्बद्ध पृष्ठभूमि वाली नेहरू, टण्डन तथा मालवीय परिवारों की (जवाहर लाल नेहरू, पुरुषोत्तम दास टण्डन तथा मदन मोहन मालवीय) महिलाएं तो स्वतंत्रता सम्बद्ध आन्दोलनों में भाग लेती ही रहीं, उच्च वर्ग की पढ़ी-लिखी सम्भ्रान्त महिलाएँ तथा मध्यम वर्ग की शिक्षित आत्मनिर्भर महिलाएं भी इस कार्य से विशेष रूप से जुड़ीं। धीरे-धीरे 1920 के बाद तीस एवं चालीस के दशम में असहयोग आन्दोलन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, 1942 की क्रान्ति आदि के समय समाज के प्रत्येक वर्ग की, प्रत्येक जाति की मलिाएं-साधारण नागरिक, ग्रामणी सामान्य जन-किसान, चाय तथा पान बेचने वाले परिवार तथा उनकी महिलाएँ भौतिक रूप से इससे समबद्ध हो उठीं। भावात्मक रूप से तो तीस तथा चालीस के दशक में बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी देश की आजादी के लिए कुछ करने को बेचैन थे।

चूँकि राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ नारी स्वातन्त्र्य नारी शिक्षा तथा सामाजिक उत्पीड़न आदि से सम्बद्ध आन्दोलन भी चल रहे थे, अतः नारी शिक्षा एवं समाज में उनकी स्थिति को सुधारने के लिए अनेक महिलाओं ने प्रयास किये। स्त्री दर्पण तथा चाँद जैसी मासिक पत्रिकाओं ने महिला शोषण, मुक्ति, नारी स्वातन्त्र्य, राष्ट्रीय चेतना, नारी अधिकार एवं कत्र्तव्य जैसे अनेकानेक विषयों का प्रकाशन किया हैं। प्रयाग के आन्दोलन से सम्बद्ध अनेक वीरांगनाओं के नाम भी समय के अन्तराल में विलीन हो गये, कुछ के केवल नाम प्राप्त हुए तथा अनेक महिलाओं के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का आंशिक ज्ञान प्राप्त हुआ। उपलब्ध सामग्री के आधार पर संक्षिप्त इस प्रकार है-

1911 से 1920 तक प्रयाग की महिलाएँ आत्मोत्कर्ष, शिक्षा तथा अधिकारों के ज्ञान प्राप्त करने में लिप्त रहीं। प्रयाग से प्रकाशित होने वाली स्त्री दर्पण पत्रिका की सम्पादिका के रूप में नहेरू परिवार की उमा नेहरू, कमला नेहरू तथा रामेश्वरी देवी ने नारी जागरण का महान् कार्य किया तथा स्त्रियों में राष्ट्रीय आन्दोलन की चेतना को स्फुरित किया। श्रीमती नन्दरानी नेहरू (1911 में) अपने भाषण द्वारा स्त्री शिक्षा पर विशेष जोर देती थीं तथा उन्हे प्रेरणा प्रदान करती थीं। उसकी समय लाट साहब की स्त्री मिसेज पोर्टर द्वारा एक पर्दा कलब रानी रामप्रिय देवी के घर पर खोला गया जिसे माध्यम से स्त्रियों की क्लब में भागीदारी को सुनिश्चित किया गया।

स्त्री दर्पण के मार्च 1914 के अंक के आधार पर प्रयाग महिला समिति के चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन में 200 स्त्रियों ने भाग लिया जिसमें राजेश्वरी चक्रवाल ने विवाह संस्कार पर, मिसेजें जोजप ने स्वास्थ्य रक्षा पर, श्रीमती उमा नेहरू ने देशोन्नति पर, तथा श्रीमति राधा चरण ने सामाजिक बुराइयों पर अपने-अपने विचार व्यक्त कर वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया। श्रीमती मोहिनी ने स्त्रियों के लिए सचिव मासिक-पत्रिका चांद का सम्पादन किया।

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय बीस के दशक में जब गान्धी जी का सत्य तथा अहिंसा पर आधारित आन्दोलन गुजरात

www.ignited.in

से पै लता हुआ बम्बई (महाराष्ट्र) को व्याप्त करता हुआ मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में भी अपनी जड़े मजबूत कर रहा था, प्रयोग में नारी मुक्ति आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री सुधार पर अनेक लेख-श्रीमती विन्ध्य वासिनी देवी, विष्णुकुमारी, कमलावी देवी, शकुन्तला देवी, विमलेश्वरी निगम, श्री प्रसाद देवी, सुभद्रा देवी, स्वरूपवती देवी, चन्द्र कला वर्मा, परमेश्वरी देवी, विद्यावती देवी निगम, बिशुन कुमारी श्रीवास्तव, ब्रजरानी देवी, जनक कुमारी जुत्शी आदि अनेकानेक अज्ञात नामा महिलाओं (ने लेखन तथा भाषण द्वारा) के द्वारा प्रकाश में आये, जिससे समाज में वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न हो गयी तथा महिलायें घर से बाहर निकलकर समाज तथा राष्ट्र के कार्य में सहयोग देने लगीं।

नेहरू परिवार की प्रत्येक महिला ने राष्ट्रीय कार्य में सहयोग देकर देश के लिए समर्पित परिवार के सदस्य होने का गौरव प्राप्त किया है। राष्ट्रनायक जवाहर लाल नेहरू की माँ श्रीमती स्वरूप रानी नेहरू तथा पत्नी श्रीमती कमला नेहरू ने बदलते हुए समाज तथा देश की पुकार के सामने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। 1930 के सत्याग्रह में स्वरूपरानी तथा कमला जी दोनों ने पर्याप्त सहयोग दिया। स्वरूपरानी ने प्रसिद्ध जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड (1919) के विरोध में स्मृति में 6 अप्रैल से 13 अप्रैल तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाया। जब उनके परिवार के सभी सदस्य (पति, पुत्र, बेटियां-विजयलक्ष्मी तथा कृष्णा आदि) जेल में डाल दिये गये, उन्होंने अपने वृद्ध शरीर द्वारा भी, जुलूस का नेतृत्व किया। पुलिस द्वारा जुलूस को तितर-बितर करने पर भी वह अपने स्थान से नहीं हटी, डटी रहीं। पुलिस के डंडे से मार रूपी अत्याचार को भी सहा। बेहोश होने पर उपचार हेतु लखनऊ अस्पताल में पड़ी हुई भी उन्होंने मुस्कुराकर कहा-'मुझे गर्व है कि मैं जवाहर लाल की माँ हूँ।' यह एक वाक्य ही उनकी राष्ट्र भक्ति एवं भावना को प्रस्तुत करने में समर्थ है।

नेहरू जी की बहन श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित का भी आन्दोलन में सक्रिय योगदान रहा। अपने पिता, माता तथा भाई के साथ-साथ स्वयं भी राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ी रहीं। सन् 1900 में जन्मीं श्रीमती पण्डित ने युवावस्था से ही स्वतंत्रता के पाठ को पढ़ा। 1921 में इनके विवाह के समय कांग्रेस कार्य समिति की बैठक सुविधावश विवाह तिथि के आसपास रखी गयी, जिससे ब्रिटिश शासन बहुत अधिक प्रभावित हुआ। श्रीमती पण्डित का सार्वजनिक जीवन विशेष रूप से 1930 से प्रकाश में आया। 5 मई, 1930 को महात्मा गान्धी के गिरपक्ततार होने के बाद विद्यार्थियों की हड़ताल में विजयलक्ष्मी की अहंभूमिका रही। विजयलक्ष्मी के साथ रंजीता पण्डित, कृष्णा पण्डित तथा कमला नेहरू सभी उस छात्र आन्दोलन में माडर्न स्कूल गईं। इसी के विरोध में स्थानीय प्रयागस्थ माडर्न स्कूल के प्रिंसिपल डॉ. घोष से श्रीमती पण्डित का वाद-विवाद हुआ। अन्ततः श्रीमती पण्डित ही विजयी रहीं। 1931 में ये जेल गयीं तथा इन्होंने महिलाओं के लिए आदर्श प्रस्तुत किया। इनके कारण ही छोटे तथा सम्भ्रान्त परिवार की महिलाएं भी अधिकाधिक संख्या में आन्दोलनों में भाग लेने लगीं। प्रयास नगरपालिका के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए, महिलाओं की शिक्षा के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये। उत्तर प्रदेश के स्थानीय स्वायत्त शासन के मंत्री पद पर भी रहीं। 1942 की जनक्रान्ति के अवसर पर जब प्रयाग रेताहीन हो गया, उस समय श्रीमती पण्डित ने ही विद्रोह का झण्डा ऊँचा करके जनता का नेतृत्व किया। देश के स्वतंत्र होने पर अमेरिका देश की प्रथम राजदूत नियुक्त हुईं।

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी द्वारा राष्ट्र की महिलाओं का आवाहन किये जाने पर जननेता जवाहर लाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू 1920 से ही स्वाधीनता संग्राम के कार्य में अपने पति के साथ किसी न किसी रूप में हाथ बंटाती थीं। उन्होंने प्रयाग में राष्ट्रीय नेताओं को भी चकित करने वाला महिला संगठन तैयार किया; जिसकी क्रियाशीलता से मुस्लिम महिलायें भी प्रभावित हुईं तथा कुछ साथ भी आयीं। महिलाओं में सामाजिक जागरूकता का कार्य कमला नेहरू ने किया। 1930 में कांग्रेस महासमिति की सदस्य बनने पर ब्रिटिश सरकार के द्वारा गिरपक्ततारी का वारण्ट जारी किया गया। उन्होंने एक साथ गृहिणी धर्म एवं राष्ट्रधर्म का निर्वाह किया। कमला जी नमक सत्याग्रह आन्दोलन में अपनी ननद कृष्णा के साथ भयंकर लू में इलाहाबाद की दुकानों में धरना देने जाया करती थीं। इन्होंने अपने नेतृत्व में विदेशी वस्तुओं की दुकानों की लिस्ट बनवाई तथा उसके आयात को रोकने का युद्ध स्तर पर प्रयास किया। 1930 में ही ब्वायज हाई स्कूल के गेट पर एक दिन जब वह महिला स्वयं सेविकाओं के साथ पिकेटिंग कर रहीं थीं, प्यास के कारण बेहोश हो गयीं किन्तु होश आने पर सत्याग्रह में तनिक भी ढील नहीं दी। उन्होंने स्वराज भवन के छोटे से कमरे में कांग्रेस औषधालय खोला तथा गरीब एवं असहायों की मुपक्तत सेवा का प्रबन्ध किया। अवस्थता के कारण 28 फरवरी, 1936 को कम आयु में इनकी कृत्यु हो गयी।

नमक सत्याग्रह आन्दोलन में ही सरकारी नमक गोदाम पर गान्धी जी के द्वारा कब्जे के लिए धावा बोलने एवं गिरपक्ततार किये जाने के बाद श्रीमती सरोजनी नायडू हड़तालादि कार्यक्रमों में शामिल होकर सामने आयीं तथा

गिरपक्ततार हुईं। इनकी जन्मस्थली मद्रास, शिक्षास्थली केम्ब्रिज तथा कर्मस्थली स्वराज्य भवन रही। इसके बाद ही सत्याग्रह के क्षेत्र को विस्तृत करके विदेशी वस्त्रों का पूर्ण बहिष्कार शुरू हुआ। स्टाक क्लीयरेंस न होने देने, आर्डर्स कैंसिल करने, चौकीदारी टैक्स न देने, लगान बन्दी आदि अनेक कार्यों में सरोजनी नायडू की अहं भूमिका रहीं।

पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री की पत्नी ललिता शास्त्री तथा डॉ. रत्न कुमारी ने भी कमला नेहरू के साथ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा नमक आन्दोलन में सहयोग देकर ग्रामीण अञ्चलों तक आन्दोलन को पहुँचाया।

1904 में प्रयोग में क्षत्राणी परिवार में जन्म प्राप्त विश्व विश्रुत वीररस की अद्वितीय कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान प्रयोग के राष्ट्रीय आन्दोलनों में देश को स्वतंत्र कराने हेतु तथा स्वदेशी के प्रचार हेतु अनेक बार गिरपक्ततार हुईं तथा जेल गयीं।

रहस्यवाद की विश्व प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा ने महात्मा गान्धी तथा रवीन्द्रनाथ ऐगेर की प्रेरणा से अपना सारा जीवन समाज, देश तथा साहित्य की श्रीवृद्धि में अर्पित कर दिया। विदेशी वस्तुओं का स्वयं तो बहिष्कार किया ही, लोगों को भी स्वदेशी वस्त्र तथा वस्तुओं को धारण करने के लिए प्रेरित किया। गान्धी जी के आह्वान पर प्रयाग में पिकेटिंग को सफल बनाने का श्रेय उन्हें ही है। स्त्री शिक्षा के कार्य में संलग्न होकर प्रसिद्ध नारी शिक्षा संस्था प्रयाग महिला विद्यापीठ का जीवन पर्यन्त सफल सञ्चालन किया।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी जिन्हें गोद की अवस्था में ही सरोजनी नायडू ने 'आधूनिक भारत की निर्मात्री' कहा था, तीन वर्ष की अवस्था से ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बनीं। मातृवंश तथा पितृवंश दोनों ओर से अनेक रक्त में राष्ट्रीय संचेतना, देशभक्ति की अजस्त्र धारा प्रवाहित थी। 11 वर्ष की अवस्था में चर्खासंघ की बाल शाखा शुरू की तथा विदेशी वस्तुओं (कपड़ें, खिलौने आदि) की तिलाञ्जलि दी। 12-13 वर्ष की अवस्था में मां कमला नेहरू के साथ सहयोग आन्दोलन में घायल लोगों की सेवा करती थीं। बालकों की वानर सेना की भी इन्होंने स्थापना की; शीघ्र ही जिसकी अनेक शाखाएं अन्य प्रान्तों में भी खुल गयीं। 1942 की जनक्रान्ति में समूचे राष्ट्र को प्रेरित करने एवं प्रत्येक घर को आन्दोलन से जुड़ने के प्रति इन्दिरा जी का विशिष्ट योगदान रहा। समाज तथा राष्ट्र के प्रति सेवा तथा प्रेमभाव के साथ कुशल गृहिणी के कत्तव्य का भी निर्वाह किया। 1966 से उनके नेतृत्व में विज्ञान, टेक्नॉलॉजी, प्रसाद भारती, विदेशी पूंजी निवेश आदि के क्षेत्र में देश ने चतुर्मुखी प्रगति की। भारत पाकिस्तान युद्ध, इन्दिरा गान्धी की दृढ़ता कुशलता तथा महाशक्ति का प्रतीक बन गया।

1942 की जनक्रान्ति तथा अगस्त क्रान्ति (भारत छोड़ो आन्दोलन) में इलाहाबाद नगर तथा स्त्रियों की अगुआई को नकारा नहीं जा सकता। 12 अगस्त को विश्वविद्यालय की बालिकाओं का जुलूस कटरा स्थित कलेक्ट्री तथा कचहरी मैदान में आया, पुलिस ने रोका, तितर बिरि करने का प्रयास किया किन्तु सभी वहीं डटे रहे। लड़कियाँ लेट गयीं, लडत्रके अनेक चारों ओर बगल में खड़े हो गये। वहीं अनेक चक्र गोलयों के चलने पर लाल पद्मधर के शहीद होने पर तथा शीर्षस्थ नेताओं की गिरपक्ततारी के बाद, क्रान्ति को संगठित करने के लिए जो कमेटी बनी उसमें विजयलक्ष्मी पण्डित, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, इन्दिरा गान्धी, डॉ. राजेन्द्र कुमार बाजपेयी, डॉ. रत्न कुमारी आदि अनेकानेक प्रयागस्थ प्रमुख विभूतियाँ थीं जिनके नेतृत्व से आन्दोलन सक्रिय रहा। इस क्रान्ति के समय समस्त बुलेटिनों और परचों की लेखिका अरुणा आसफ अली तथा सुचेता कृपलानी रहीं जिन्होंने प्रच्छन्न रूप से भूमिस्थ (underground) होकर, तत्कालोचित अहं पै सले लेने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने अपने उल्लिखित पत्र में नम्रता प्रदर्शित करते हुए लिखा है- 'जो हजारों लाखों मन औपादानिक शक्तियां मुक्त हुईं, उनकी एक आध माशा परिचालना हमने दी।' इस क्रान्ति के समय पुलिस तथा फौजी अफसरों एवं फौजियों के द्वारा लज्जा तथा सतीत्व नाश से सम्बद्ध अनेक घटनायें भी हुई, फिर भी अज्ञात नामा महिलाओं ने राष्ट्र हित में उन यातनाओं को सहकर भी अपने कर्तव्य का निर्वाह किया।

इसके साथ ही अनेकानेक महिलएँ जिनका उल्लेख लिखित तो नहीं प्राप्त हुआ किन्तु स्वयं के वार्तालाप तथा सुश्री अमिता श्रीवास्तव जो इलाहाबार म्यूजियम में कार्यरत हैं तथा वर्तमान में मौखिक इतिहास परियोजना से सम्बद्ध हैं- के द्वारा लिए गये साक्षात्कार के आधार पर ज्ञात हुए, उन सबका संक्षिपत विवरण निम्नलिखित है-

प्रेमलता जायसवाल (डॉ. शकुन्तला जायसवाल की माँ) ने 1942 की जनक्रान्ति में हिस्सा लिया तथा गिरफ्तार भी हुईं। गंगादेवी (दादी डॉ. माया अग्रवाल, प्रभारी इलाहाबाद डिग्री कालेज) कमला नेहरू की मित्र थीं, घरेलू व्यवहार था तथा उनके साथ विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आन्दोलन में सक्रिय रूप से कार्यरत रहीं।

वर्तमान में 90 वर्षीया रामा देवी वस्तुतः निरक्षर किन्तु राष्ट्रीय आन्दोलन से अपने पति के साथ, 16 वर्ष की अवस्था से ही, सप्रिय रूप से सम्बद्ध रहीं। जेल तथा कालकोठरी की प्रताड़ना को सहते हुए, सामाजिक तथा राष्ट्रीय कार्य करने के कारण परिवार की प्रताड़नाओं तथा

www.ignited.in

अपमान को सहा। बनारस के स्थायी निवास को छोड़कर पति के साथ इलाहाबाद में किराये के मकान में रहीं। सन्तानहीन किन्तु बहन की बेटी के साथ जीवन व्यतीत करती हुई इस अवस्था में भी उनमें भावनात्मक क्रियाशीलता है। गान्धी नेहरू की सभाओं में जाना, उनकी योजनाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग देना उनका मुख्य कार्य था। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में उनका विशेष सहयोग रहा। वे स्वयं नमक बनाती थीं, पुड़िया बनाकर दुकानों में बेचती थीं, इकट्ठे पैसों को कांग्रेस के कोश में जमा करती थीं। आन्दोलन के समय अनेक महिलाओं के साथ कांग्रेस वालेण्टियर्स का भोजन बनाती थीं। पुलिस की मार खाती थीं। चुनाव के समय कांग्रेस प्रत्याशियों का प्रचार करती थीं।

अपने साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि अंग्रेज सिपाहियों का भय, आतंक, सख्ती के बाद भी दृढ़ संकल्प के साथ मन में आजादी का सपना संजोये उन्होंने कार्य किया है। प्रत्येक जुलूस में वह पति के साथ इन्दिरा गान्धी तथा राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी आदि के साथ घूमती थीं। उन्होंने उस समय के जोश की तथा भगतसिंह चन्द्रशेखर, पद्मधर आदि अनेक शहीदों की भी चर्चा की। प्रातः चार बजे वह बनारस तथा इलाहाबाद में होने वाली सभाओं में जाती थीं। गान्धी के विचार तथा क्रियाशीलता से विशेष प्रभावित थीं। उन्होंने प्रशासन द्वारा माफी माँगने पर छोड़ने का प्रस्ताव रखने पर भी देश के लिए माफी नहीं माँगी तथा गर्व के साथ जेल तथा कालकोठरी की सजा को सहा।

प्रयाग की धरती को ही अपने जन्म से पवित्र करने वाली राजिखया बीबी उम्र 80 वर्ष, चौधरी उबैदुररहमान (प्रयाग निवासी) की पुत्री तथा सैयद सईद अहमद क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता की पत्नी ने उस जेंमाने को देखा है, वेदना का अनुभव किया है। भावनात्मक रूप से उस आन्दोलन से वे अनवरत जुड़ी रहीं, भौतिक रूप से पति, भतीजे तथा भाँजे के इन्कलाबी कार्य में सहयोग देती रहीं। पर्दा प्रथा के कारण बचपन में बहुत अधिक नहीं पढ़ पायीं। दीन की कुछ किताबें तथा कलामपाक को पढ़ा था। किन्तु पतिगृह में स्वतंत्रता होने से सिलाई आदि सीखकर आत्मनिर्भर हुईं-सिलाई स्कूल खोला। मुहल्ले में कम्युनिस्ट पार्टी की मीटिंग में तथा उनकी तकरीरें सुनने पति के साथ जाया करती थीं। बमरौली क्षेत्र में जेंमींदार के घर पैदा हुईं राजिया बीवी अपने बचपन की घटी बड़ी बताती हैं कि उस समय गान्धी और इन्कलाब का जोंर था- देश गुलाम है, आजाद हो जाये बस यही नारा था। वह कहती हैं-'उस जेंमाने में लोग खुश थे खुशहाल नहीं थे। आज लोग खुशहाल हैं, खुश नहीं है।' वह बताती हैं कि पार्टी के कार्य के कारण ही मेरे पति सरकारी नौकरी (सेक्रेटेरिएट) से निलम्बित हुए थे। उस समय गान्धी तथा क्रान्तिकारियों दोनों का आन्दोलन तेजीं पर था तथा अवाम के लिए था। देश की आजादी बंटवारे की कीमत पर हुई। उनके परिवार के सभी सदस्य पाकिस्तान चले गये किन्तु वे अपने मुल्क (भारत) को छोड़कर नहीं गयीं। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने हिन्दू मुसलमानों में भेद पैदा किया। अन्यथा दोनों अच्छे तथा दोनों बुरे हैं।

90 वर्षीय श्रीमती महताब कांवर उर्फ शान्ती देवी (पीसिया पुरगाँव, इलाहाबाद) का हृदय देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है। विवाहोपरान्त पति के साथ इलाहाबाद में रहीं। पर्दा प्रथा, समाज में महिलाओं पर अनेक बन्धन तथा पति के सरकारी कर्मचारी (कचेहरी) होने के कारण वे सक्रिय भौतिक सहयोग तो न दे सकीं, किन्तु भावात्मक रूप से वह पूर्णतया सम्बद्ध थीं। सभाओं में पति के साथ जाती थीं, गान्धी नेहरू तथा कमला नेहरू के आदेशों का पालन प्रसन्नतापूर्वक करती थीं। अनेक पति अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन में भाग नहीं लेते थे। वफादार सैनिक की भूमिका का निर्वाह करते हुए वे प्रोन्नतियों को भी प्रापत करते थे किन्तु गान्धी नेहरू की सभाओं में छुट्टी लेकर जाते थे। अंग्रेजों के अत्याचार से उनके मन में भी आक्रोश था। देश की आजादी वे चाहते थे। शान्ति देवी कहती हैं कि कमला नेहरू ने उनसे बात की थी। उन्होंने विदेशी साड़ी पहनना छोड़ दिया था। कमला नेहरू अस्पताल बनने के लिए पब्लिक से लिये गये चंदे की भी उन्होंने चर्चा की। इन्दिरा गान्धी, कमला नेहरू, जवाहर लाल नेहरू, राजेन्द्र बाजपेयी आदि से वह प्रभावित थीं। वह कहती हैं, 'अंग्रेजन के राज में सूख्ती रही लेकिन जबरदस्ती रही।' भरे कण्ठ से उन्होंने कहा 'स्वराज सहज नहीं मिला है बहुत आदमी मारे गये हैं।' उन्होंने आजादी की लड़ाई के दौरान हुए दन्गों की भी चर्चा की तथा मुस्लिम सहयोग का भी उल्लेख किया। वह कहती हैं कि उनके मन में भी कुछ करने की इच्छा थी किन्तु पढ़ी-लिखी न होने से कुछ भी नहीं कर पायीं। वह कहती हैं आजादी के बाद देश में बहुत उन्नति हुई। बहू, बेटियाँ पढ़ती हैं, आत्मनिर्भर हैं भय नहीं है। सभी स्वतंत्र हैं। अपने देश में आज हर चीजें बनती है। इसके साथ घर की औरतों को भी आजादी मिले तभी इसका कोई अर्थ है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में रामादेवी, राजिखया बीबी तथा शान्ती देवी सदृश अनेकानेक अज्ञात नामा यशः शरीरी महिलाओं ने अपना भावात्मक, शारीरिक, मानसिक, आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। उनके विचारों, पसीने की बून्दों तथा रक्त से सिंचित इस स्वतंत्र भारत भूमि के प्रति हम अपना शीश नवाते हैं, शत शत श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

संदर्भ सूची

भारतीय सामाजिक आंदोलन – वी. एन. सिंह

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन – के. एल. खुराना

समाजशास्त्र – डी. डी. शर्मा

भारतीय सामाजिक आंदोलन – एम. एस. राव

भारतीय आंदोलन के इतिहास में महिलाएं – खुराना एवं चौहान

Corresponding Author

Dr. Anju Srivastava*

Associate Professor, Department of Sociology, Arya Kanya Degree College, Prayagraj (UP)

dr.anju.shri@gmail.com